१६. मैं उद्‌घोषक

– आनंद सिंह

लेखक परिचय : आनंद प्रकाश सिंह जी का जन्म २१ जुलाई १९५८ को असम राज्य के धुबरी नामक स्थान पर हुआ । आपकी शिक्षा-दीक्षा उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ एवं इलाहाबाद में हुई । आपकी रुचियों और वृत्तियों ने आपको कविता, लेख, फिल्म, नाट्य और कला समीक्षा का हस्ताक्षर बना दिया । श्रेष्ठ उद्‌घोषक तथा सफल मंच संचालक के रूप में आपकी विशेष पहचान है । आकाशवाणी मुंबई में २९ वर्ष उद्‌घोषक के रूप में अपनी सेवाएँ देकर आप अवकाश ग्रहण कर चुके हैं । आपने आकाशवाणी के लिए आवश्यक संवाद लेखन करते हुए संवाद तथा संप्रेषण क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई है । आपने विभिन्न समसामयिक विषयों पर लेखन करते हुए हिंदी भाषा की सेवा की है ।

प्रमुख कृतियाँ : पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर लेख, समीक्षाएँ, कहानियाँ, कविताएँ आदि प्रकाशित ।

आत्मकथा : आत्मकथात्मक लेखन हिंदी साहित्य में रोचक और पठनीय माना जाता है । अपने अनुभवों, व्यक्तिगत प्रसंगों को पूरी निष्ठा से बताना आत्मकथा की पहली शर्त है । इसमें लेखक की तटस्थता, घटनाओं के प्रति निरपेक्षता का निर्वाह आत्मकथा को विश्वसनीय बना देता है । आत्मकथा उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम 'मैं' में लिखना आवश्यक है ।

पाठ परिचय : यहाँ सूत्र संचालन की प्रस्तुति 'आत्मकथा' के रूप में की गई है । प्रस्तुत पाठ में लेखक ने सफल उद्‌घोषक अथवा मंच संचालक बनने के लिए आवश्यक गुणों का उल्लेख किया है । लेखक का मानना है कि कार्यक्रम की सफलता मंच संचालक के आकर्षक और उत्तम संचालन पर निर्भर करती है । संचालक की सूझ-बूझ, समयसूचकता, हाजिरजवाबी और भाषा प्रभुत्व समारोह को नये आयाम प्रदान करते हैं । वर्तमान काल में मंच अथवा सूत्र संचालन कार्य अपने-आप में महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में प्रसिद्‌ध हो गया है ।

मैं उद्‌घोषक हूँ । उद्‌घोषक के पर्यायवाची शब्द के रूप में 'मंच संचालक' और अंग्रेजी में कहें तो एंकर हूँ । मंच संचालक श्रोता और वक्ता को जोड़ने वाली कड़ी है । मैं उसी कड़ी का काम करता हूँ । इसके लिए मेरी कई नामचीन व्यक्तियों द्‌वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है । भारत रत्न पं. भीमसेन जोशी जैसी हस्तियों के मुँह से यह सुनना कि बहुत अच्छा बोलते हो, अच्छे उद्‌घोषक हो या 'मैं तो तुम्हारा फैन हो गया' तो सचमुच स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ ।

किसी भी कार्यक्रम में मंच संचालक की बहुत अहम भूमिका होती है । वही सभा की शुरुआत करता है । आयोजकों को तथा अतिथियों को वही मंच पर आमंत्रित करता है, वही अपनी आवाज, सहज और हास्य प्रसंगों तथा काव्य पंक्तियों से कार्यक्रम की सफलता निर्धारित करता है । मैंने कई बार इस महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह अत्यंत सफलतापूर्वक किया है लेकिन यह सब यों अचानक नहीं हो गया । मैंने भी इसके लिए बहुत पापड़ बेले हैं । आरंभिक दिनों में मैं भी मंच पर जाते घबराता था । माइक मुझे साँप के फन की तरह नजर आता था । दिल जोर-जोर से धड़कने लगता था । मुझे याद है - तब मैं नौवीं कक्षा का छात्र था । विद्‌यालय के प्रांगण में गांधी जयंती का आयोजन किया गया था । मुझे भी भाषण देने के लिए चुना गया । मंच पर जाते ही हाथ-पैर थरथराने लगे । जो कुछ याद किया था, लगा, सब भूल गया हूँ । कुछ पल के लिए जैसे होश ही खो बैठा हूँ पर फिर खुद को सँभाला । महान व्यक्तियों के आरंभिक जीवन के प्रसंगों को याद किया कि किस तरह कुछ नेता हकलाते थे, कुछ काँपते थे पर बाद में वे कुशल वक्ता बने । ये बातें याद आते ही हिम्मत जुटाकर मैंने बोलना शुरू किया और बोलता ही गया । भाषण समाप्त हुआ । खूब तालियाँ बजीं । खूब वाह-वाही मिली । कहने का मतलब यह कि थोड़ी-सी हिम्मत और आत्मविश्वास ने मुझे भविष्य की राह दिखा दी और मैं एक सफल सूत्र संचालक के रूप में प्रसिद्‌ध हो गया ।

सूत्र संचालन के मुख्यत: निम्न प्रकार हैं – • शासकीय कार्यक्रम का सूत्र संचालन • दूरदर्शन हेतु सूत्र संचालन • रेडियो हेतु सूत्र संचालन • राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सूत्र संचालन

• शासकीय एवं राजनीतिक कार्यक्रम का सूत्र संचालन : शासकीय एवं राजनीतिक समारोह के सूत्र संचालन में प्रोटोकॉल का बहुत ध्यान रखना पड़ता है। पदों के अनुसार नामों की सूची बनानी पड़ती है। किसका-किसके हाथों सत्कार करना है; इसकी योजना बनानी पड़ती है। इस प्रकार का सूत्र संचालन करते समय अति आलंकारिक भाषा के प्रयोग से बचना चाहिए।

• दूरदर्शन तथा रेडियो कार्यक्रम का सूत्र संचालन : दूरदर्शन अथवा रेडियो पर प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रम/समारोह की संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए। कार्यक्रम की संहिता लिखकर तैयार करनी चाहिए। उसके पश्चात कार्यक्रम प्रारंभ करना चाहिए और धीरे-धीरे उसका विकास करते जाना चाहिए। भाषा का प्रयोग कार्यक्रम और प्रसंगानुसार किया जाना चाहिए। रोचकता और विभिन्न संदर्भों का समावेश कार्यक्रम में चार चाँद लगा देते हैं।

स्मरण रहे- सूत्र संचालक मंच और श्रोताओं के बीच सेतु का कार्य करता है। सूत्र संचालन करते समय रोचकता, रंजकता, विविध प्रसंगों का उल्लेख करना आवश्यक होता है। कार्यक्रम/समारोह में निखार लाना सूत्र संचालक का महत्त्वपूर्ण कार्य होता है। कार्यक्रम के अनुसार सूत्र संचालक को अपनी भाषा और शैली में परिवर्तन करना चाहिए; जैसे- गीतों अथवा मुशायरे का कार्यक्रम हो तो भावपूर्ण एवं सरल भाषा का प्रयोग अपेक्षित है तो व्याख्यान अथवा वैचारिक कार्यक्रम में संदर्भ के साथ सटीक शब्दों का प्रयोग आवश्यक है। सूत्र संचालन करते समय उसके सामने सुनने वाले कौन हैं; इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

अच्छे मंच संचालक के लिए आवश्यक है – अच्छी तैयारी। वर्तमान समय में संगीत संध्या, बर्थ डे पार्टी या अन्य मंचीय कार्यक्रमों के लिए मंच संचालन आवश्यक हो गया है। मैंने भी इस तरह के अनेक कार्यक्रमों के लिए सूत्र संचालन किया है। जिस तरह का कार्यक्रम हो, तैयारी भी उसी के अनुसार करनी होती है। मैं भी सर्वप्रथम यह देखता हूँ कि कार्यक्रम का स्वरूप क्या है? सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक, कवि सम्मेलन, मुशायरा या सांस्कृतिक कार्यक्रम ! फिर उसी रूप में मैं कार्यक्रम का संहिता लेखन करता हूँ। इसके लिए कड़ी साधना व सतत प्रयास आवश्यक है। कार्यक्रम की सफलता सूत्र संचालक के हाथ में होती है। वह दो व्यक्तियों, दो घटनाओं के बीच कड़ी जोड़ने का काम करता है। इसलिए संचालक को चाहिए कि वह संचालन के लिए आवश्यक तत्त्वों का अध्ययन करे। सूत्र संचालक के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण गुणों का होना आवश्यक है। हँसमुख, हाजिरजवाबी, विविध विषयों का ज्ञाता होने के साथ-साथ उसका भाषा पर प्रभुत्व होना आवश्यक है। कभी-कभी किसी कार्यक्रम में ऐन वक्त पर परिवर्तन होने की संभावना रहती है। यहाँ सूत्र संचालक के भाषा प्रभुत्व की परीक्षा होती है। पूर्व निर्धारित अतिथियों का न आना, यदि आ भी जाए तो उनकी दिनभर की कार्य व्यस्तता का विचार करते हुए कार्यक्रम पत्रिका में संशोधन/सुधार करना पड़ता है। आयोजकों की ओर से अचानक मिली सूचना के अनुसार संहिता में परिवर्तन कर संचालन करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाना ही सूत्र संचालक की विशेषता होती है।

सूत्र संचालक का मिलनसार होना भी आवश्यक होता है। उसका यह मिलनसार व्यक्तित्व संचालन में चार चाँद लगाता है। सूत्र संचालक को विविध विषयों का ज्ञाता होना भी आवश्यक है। यदि सूत्र संचालक भौतिकीय विज्ञान, परमाणु विज्ञान जैसे विषयों और विभिन्न राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय नेताओं के सामने कार्यक्रम का संचालन करता

सूत्र संचालन

सूत्र संचालन के चरण/बिंदु

- श्रोतागण वंदन, स्वयं का परिचय, स्वागत
- मंच पर उपस्थित महानुभावों का आदरपूर्वक सम्मान
- सकारात्मक अभिप्राय
- सहज, उत्स्फूर्त, संचालन
- आवाज में उतार-चढाव
  श्रोताओं से संवाद
- समय सूचकता, हाजिरजवाबीपन
- गलती पर तुरंत माफी
- कार्यक्रम के अनुसार भाषाशैली में परिवर्तन

हो तो संबंधित राष्ट्र तथा विषयों का ज्ञाता होना आवश्यक है । कड़ी साधना, गहराई से अध्ययन करते हुए विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं । आकाशवाणी और सार्वजनिक कार्यक्रमों के मंचों पर संचालन कार्य ने मेरे व्यक्तित्व को नई ऊँचाई प्रदान की है । इस विषय में मेरी सफलता का प्रमुख कारण है मेरा प्रस्तुतीकरण क्योंकि मंच संचालन की सफलता संचालक के प्रस्तुतीकरण पर ही निर्भर करती है ।

मैं इस बात का ध्यान रखता हूँ कि कार्यक्रम कोई भी हो, मंच की गरिमा बनी रहे । मंचीय आयोजन में मंच पर आने वाला पहला व्यक्ति संचालक ही होता है । एंकर (उद्‌घोषक) का व्यक्तित्व दर्शकों की पहली नजर में ही सामने आता है । अतएव उसका परिधान, वेशभूषा, केश सज्जा इत्यादि सहज व गरिमामयी होनी चाहिए । उद्‌घोषक या एंकर के रूप में जब वह मंच पर होता है तो उसका व्यक्तित्व और उसका आत्मविश्वास ही उसके शब्दों में उतरकर श्रोता तक पहुँचता है । सतर्कता, सहजता और उत्साहवर्धन उसके मुख्य गुण हैं । मेरे कार्यक्रम का आरंभ जिज्ञासाभरा होता है । बीच-बीच में प्रसंगानुसार कोई रोचक दृष्टांत, शेर-ओ-शायरी या कविताओं के अंश का प्रयोग करता हूँ । जैसे- एक कार्यक्रम में वक्ता महिलाओं की तुलना गुलाब से करते हुए कह रहे थे कि महिलाएँ बोलती भी ज्यादा हैं और हँसती भी ज्यादा हैं । बिलकुल खिले गुलाबों की तरह वगैरह...। जब उनका वक्तव्य खत्म हुआ तो मैंने उन्हें धन्यवाद देते हुए कहा कि सर आपने कहा कि महिलाएँ हँसती-बोलती बहुत ज्यादा हैं तो इसपर मैं महिलाओं की तरफ से कहना चाहूँगा,

'हर शब्द में अर्थ छुपा होता है । हर अर्थ में फर्क छुपा होता है ।
लोग कहते हैं कि हम हँसते और बोलते बहुत ज्यादा हैं ।
पर ज्यादा हँसने वालों के दिल में भी दर्द छुपा होता है ।'

मेरी इस बात पर इतनी तालियाँ बजीं कि बस ! महिलाएँ तो मेरी प्रशंसक हो गईं । कार्यक्रम के बाद उन वक्ताओं ने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा, 'बहुत बढ़िया बोलते हो ।' संक्षेप में; कभी कोई सहज, हास्य से भरा चुटकुला या कोई प्रसंग सुना देता हूँ तो कार्यक्रम बोझिल नहीं होता तथा उसकी रोचकता बनी रहती है । विभिन्न विषयों का ज्ञान होना जरूरी है । कार्यक्रम कोई भी हो; भाषा का समयानुकूल प्रयोग कार्यक्रम की गरिमा बढ़ा देता है । इसके लिए आपका निरंतर पढ़ते रहना आवश्यक है ।

मैं भी जब छोटा था तो रोज शाम के समय नगर वाचनालय में जाता था । 'चंपक', 'नंदन', 'बालभारती' और 'चंदामामा' जैसी पत्रिकाएँ पढ़ता था । बाद में 'धर्मयुग', 'हिंदुस्तान', 'दिनमान', 'कादंबिनी', 'सारिका', 'नवनीत', 'रीडर्स डाइजेस्ट' जैसी मासिक-पाक्षिक पत्रिकाएँ पढ़ने लगा । रेडियो के विविध कार्यक्रमों को सुनना बेहद पसंद था । ये सारी बातें कहीं-न-कहीं प्रेरणादायक रहीं तथा सूत्र संचालन का आधारस्तंभ बनीं ।

मैं उद्‌घोषक/मंच संचालक की भूमिका पूरी निष्ठा से निभाता रहा हूँ और श्रोताओं ने मुझे अपार स्नेह और यश से समृद्‌ध किया है । किंग ऑफ वॉईस, संस्कृति शिरोमणि, अखिल आकाशवाणी जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हूँ । मैंने भी विज्ञापन देखकर रेडियो उद्‌घोषक पद हेतु आवेदन किया था । २९ वर्ष तक मैंने वहाँ अपनी सेवाएँ प्रदान कीं; इसका मुझे गर्व है ।

मैं उद्‌घोषक हूँ । शब्दों की दुनिया में रहता हूँ । जब रेडियो से बोलता हूँ तो हर घर, सड़क-दर-सड़क, गली-गली में सुनाई पड़ता हूँ, तब मेरी कोई सूरत नहीं होती । मेरा कोई चेहरा भी नहीं होता लेकिन मैं हवाओं की पालकी पर सवार दूर गाँवों तक पहुँच जाता हूँ । जब एंकर बन जाता हूँ तो अपने दर्शकों के दिलों को छू लेता हूँ । आप मुझे आवाज के परदे पर देखते हैं । मैं उद्‌घोषक हूँ । मैं एंकर हूँ ।

रोजगार के अवसर

इस क्षेत्र में भी रोजगार की भरपूर संभावनाएँ हैं । इसमें आप नाम-दाम दोनों कमा सकते हैं । मुझे भाषा का गहराई से अध्ययन करना पड़ा है । लोग भले ही कहें कि भाषा का अध्ययन क्यों करें? क्या इससे रोजगार मिलता है? पर मैं आज तक के अपने अनुभवों से कहना चाहता हूँ कि भाषा का विद्‌यार्थी कभी बेकार नहीं रहता । सूत्र संचालन में भी भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है । भाषा की शुद्‌धता, शब्दों का चयन, उनका उचित प्रयोग, किसी प्रख्यात साहित्यकार या व्यक्तित्व के कथन का उल्लेख कार्यक्रम को प्रभावशाली एवं हृदयस्पर्शी बना देता है । विभिन्न कार्यक्रमों के साथ आप रेडियो या टी.वी. उद्‌घोषक के रूप में रोजगार पा सकते हैं ।

— o —

स्वाध्याय

पाठ पर आधारित

(१) 'सूत्र संचालक के कारण कार्यक्रम में चार चाँद लगते हैं', इसे स्पष्ट कीजिए।

(२) उत्तम मंच संचालक बनने के लिए आवश्यक गुण विस्तार से लिखिए।

(३) सूत्र संचालन के विविध प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

व्यावहारिक प्रयोग

(१) अपने कनिष्ठ महाविद्यालय में मनाए जाने वाले 'हिंदी दिवस समारोह' का सूत्र संचालन कीजिए।

(२) शहर के प्रसिद्ध संगीत महोत्सव का मंच संचालन कीजिए।

सूत्र संचालन की तैयारी

- वाचन
- आकर्षक व्यक्तित्व
- कार्यक्रम पत्रिका
- भाषाशैली का विकास
- उच्चारण में शुद्धता
- समयसूचकता